drinking water is not thirty-eight thousand as was mentioned in some official documents but 2,27,000;

(b) if so, how the first figures of 38,000 problem villages was arrived at and whether the present figures of 2,27,000 has been fully verified to be authentic;

(c) whether the allocation of funds made during the Seventh Five Year Plan was estimated keeping in view only 38,000 villages and a promise had been given to the nation that by the end of the Seventh Five Year Plan every village would get drinking water; and

(d) whether the said promise can still be fulfilled and if so, what additional allocation is likely to be made to meet the target?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF RURAL DEVELOPMENT IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI RAMANAND YADAV): (a) and (b) At the beginning of the Sixth Plan (1-4-1980), out of the problem villages identified on the basis of surveys conducted by States earlier, about 2.30 lakh problem villages remained to be provided with safe drinking water facilities. Out of these 1.92 lakh problem villages were provided with at least one source of safe drinking water during the Sixth Plan. On 1-4-1985 about 38,000 problem villages were left uncovered. Further surveys conducted by States by 1-4-1985, identified an additional 1.89 lakh villages as freshly identified problem villages, thus making a total of about 2.27 lakh problem villages remaining to be covered. The increase in number of problem villages due to drought resulting in failure of sources and contamination of existing sources. No further surveys for identifying problem villages have been envisaged.

(c) No, Sir. According to Plan document by the end of Seventh Five Year Plan entire rural population would get drinking water.

(d) Yes, Sir. Question of additional allocation at this stage does not arise.

Appointment of Chief Engineer (Floods) in the Delhi Administration

2168. SHRI M. KADHARSHA: Will the Minister of WATER RESOURCES be pleased to state:

(a) whether it is a fact that vigilance cases are being conducted against a Superintending Engineer (Floods) in Delhi Administration;

(b) whether it is also a fact that the same officer is still being considered for the post of Chief Engineer (Floods) in Delhi Administration ignoring the merits of others though he is placed at the bottom in the panel; and

(c) if so, what are the details thereof and the reasons for considering his name in the panel without deciding the vigilance cases still pending against him?

THE MINISTER OF WATER RESOURCES (SHRI B. SHANKARANAND): (a) to (c) No Superintending Engineer belonging to the Irrigation and Flood Control Wing of the Delhi Administration, against whom any specific vigilance case has been initiated, is being considered for appointment to the post of Chief Engineer (Irrigation & Flood Control) of the said Administration.

रबी की फसल के लिए अन्न उत्पादन संबंधी प्रदर्शन

2169. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव:** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कुछ समय पूर्व भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने किसानों के सहयोग से मुंगेर जिले में बिन्दा दियारा क्षेत्र में एकाशी अंचल के जमालपुर में रबी की फसल के लिए अधिक अन्न उत्पादन संबंधी प्रदर्शन का आयोजन किया था

जिसमें चना और रेंचा का फसल संबंधी प्रदर्शन बिलकुल असफल रहा और गेहूं की फसल को उत्पादन दर भी कम होने की संभावना है ;

(ख) क्या यह भी सच है कि गेहू और मक्का जैसी फसलों की किस्म जिन्हें एक समय श्री नारमन बोरलाग द्वारा विकसित कि ा गया था, की तरह की चना की एक भी किस्म भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा अभी तक विकसित नहीं की जा सकी है; और

(ग) क्या भारतीय कृषि अनुसधान संस्थान किसी स्थायी योजना के तहत गंगादियारा का आधिग्रहण करने और इस क्षेत्र का विकास करने के लिए सतत प्रयास करने का विचार रखता है और यदि हां, तो उक्त योजना का ब्यौरा क्या है ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा) : (क) भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली (भा०कृ०अ० स०) ने बोचानी गांव (जम लपुर ब्लाक), मुंगेर जिले में चना (बी जी–261, बी जी 256 तथा बी जी–241) तथा (पूसा बारानी) सहित रबी फसलों पर क्षेत्र प्रदर्शन के आस-पास क्षेत्र दिवस का आयोजन किया था । किसानों की आम फसलों की तुलना में चने तथा रेंचा पर प्रदर्शन बहुत अच्छी दशाओं में किया गया था । गेहूं प्रदर्शन से फसल की उतनी ही अच्छी फसल मिलने की भी आशा की जाती है । गेहू प्रदर्शन के परिणामों का अभी इन्तजार है ।

(ख) जी नहीं, श्रीमन् देश में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अनुसंधान संस्थानों तथा कृषि विश्व-विद्यालयों द्वारा चने की अधिक उपज देने वाली किस्में विकसित की गई है।

(ग) जी नहीं, श्रीमन्, किसानों तथा राज्य कृषि विभागों के विस्तार कार्यकर्त्ताओं के लिए नवीनतम कृषि, प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन के उद्देश्य से अल्प अवधि लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की किसानों तक प्रौद्योगिकी का प्रसार करने वाली प्रायोजनाए केवल प्रथम स्तर के प्रदर्शनों को आयोजित करती हैं। गगा दियारा के विकास के लिए लम्बी अवधि की प्रायोजनाओं को चलाने का दायित्व बिहार सरकार का है।

अरहर की फसल

2170. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव:** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या किसी संस्थान द्वारा हाल ही में अरहर की ऐसी कोई किस्म विकसित की है जिसे एक वर्ष में तीन बार काटा जा सकता है; यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ;

(ख) क्या यह सच है कि उपयोग किये गये बन्द गोभी के पौधों को सब्जी के प्रयोजनार्थ पुनः उगाया जा सकता है और इसी तरह गाजर-मूली की मुन्डी को काट कर उपयोग के लिए पुनः व उगाया जा सकता है ;

(ग) यदि हां, तो इस तरीके को लोकप्रिय बनाने के लिए सरकार ने क्या कार्यवाही की है ; और

(घ) क्या भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नये प्रयोगों के लिए किसानों को प्रोत्साहित नहीं करती है; यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा) : (क) अन्तर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (इक्रीसेट) द्वारा अरहर की जल्दी पकने वाली किस्मों में से एक किस्म आई सी पी एल–87 (प्रगति) विकसित की गई है जो खरीफ मौसम में पहले की ही तरह उगाई जाती है परन्तु इसका रखरखाव पूरे वर्ष किया जाता है और इसकी वर्ष में दो से तीन बार फसल ली जाती है। तथापि इस पद्धति की संभाव्यता की पुष्टिकारक जांचे की जा रही हैं।